

# अध्याय 01

## वर्ण-विचार व वर्तनी विवेक

### वर्ण की परिभाषा

“भाषा की वह सबसे छोटी इकाई, जिसके और टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है।”  
वर्ण भाषा का आधार होते हैं, जिनसे शब्दों की रचना होती है।

#### उदाहरण

किसान फसल उगाएगा।

किसान = क + इ + स् + आ + न् + अ

फसल = फ + अ + स् + अ + ल् + अ

उगाएगा = उ + ग् + आ + ए + ग् + आ

उपर्युक्त वाक्य तीन शब्दों से मिलकर बना है। यहाँ ‘किसान’, ‘फसल’ और ‘उगाएगा’ तीनों ही शब्द छः वर्णों से बने हैं। अब इनके और टुकड़े करना सम्भव नहीं है।

### वर्णमाला

वर्णों का समूह वर्णमाला कहलाता है। अन्य शब्दों में “किसी भाषा में वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।”

### वर्णों के भेद

वर्णों के दो भेद होते हैं

#### 1. स्वर

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती तथा जिनके उच्चारण बिना रुकावट के बाहर निकलते हों, उन्हें स्वर कहते हैं;

जैसे—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ…………आदि।

प्रस्तुत अध्याय वर्ण,  
वर्णमाला, स्वर,  
व्यंजन तथा  
वर्तनी सम्बन्धी  
अशुद्धियों को कैसे  
ढूँढ़ें कवें आदि पर  
आधारित है।

स्वर के तीन भेद होते हैं; जैसे—

- (i) **ह्रस्व स्वर** जिन वर्णों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है—अ, इ, उ और ऋ।
- (ii) **दीर्घ स्वर** जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ।
- (iii) **प्लुत स्वर** जिन वर्णों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इनका प्रयोग प्रायः किसी को पुकारने के लिए किया जाता है; जैसे—ओऽम, राऽम, हेऽऽ आदि।

## स्वरों की मात्राएँ

जब शब्दों की शुरुआत स्वर से होती है, तो उन्हें मूल रूप में लिखा जाता है। व्यंजन के साथ इनका प्रयोग मूल रूप में न करके मात्रा के रूप में किया जाता है।

प्रत्येक स्वर के लिए अलग-अलग मात्राएँ निश्चित हैं। इन्हीं मात्राओं के रूप में ये स्वर व्यंजन से जुड़ते हैं।

उदाहरण

स्वर	मात्रा	प्रयोग एवं मात्रायुक्त शब्द
अ	कोई मात्रा नहीं	क + अ = क कल, कब
आ	।	क + आ = का काल, काम
इ	ि	क + इ = कि किधर, किनारा
ई	ी	क + ई = की कील, कीचड़
उ	ु	क + उ = कु कुल, कुछ
ऊ	ू	क + ऊ = कू कूदना, कूप
ऋ	ॄ	क + ऋ = कृ कृषक, कृपा
ए	ै	क + ए = के केशव, केवल
ऐ	ॐ	क + ऐ = कै कैलाश, कैसा
ओ	ॐ	क + ओ = को कोयला, कोप
औ	ॐ	क + औ = कौ कौशल, कौरव

## 2. व्यंजन

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वतन्त्र रूप से स्वरों की मदद लेनी पड़ती है तथा जिनका उच्चारण स्वतन्त्र रूप से नहीं किया जा सकता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं; जैसे—क, ख, ट, फ, य, ह आदि। इनकी संख्या 33 होती है।

व्यंजन के निम्न आधार पर भेद किए जा सकते हैं

### (i) उच्चारण के आधार पर

- (a) **स्पर्श व्यंजन** जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में हवा मुँह के विभिन्न भागों को छूती हुई या स्पर्श कर बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 25 है। ये व्यंजन हैं

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	(उच्चारण स्थान कण्ठ)
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	(उच्चारण स्थान तालु)
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	(उच्चारण स्थान मूर्द्धा)
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	(उच्चारण स्थान दाँत)
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	(उच्चारण स्थान ओष्ठ)

इनमें प्रत्येक वर्ग के अन्तिम वर्ण (अक्षर) को **पंचमाक्षर** भी कहा जाता है।

- (b) **अन्तःस्थ व्यंजन** जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ, मुँह के किसी भी भाग से पूरी स्पर्श नहीं करती है और न ही स्वरों के समान स्वतन्त्र रूप से बाहर निकलती है, उन्हें अन्तःस्थ व्यंजन कहा जाता है। इनका उच्चारण स्वर एवं व्यंजन के बीच का होता है। इनकी संख्या चार है। ये व्यंजन हैं—य, र, ल और व। 'व' को दंतोष्ठ्य व्यंजन भी कहा जाता है, क्योंकि इसके उच्चारण में दाँत और होठों का परस्पर स्पर्श होता है।

- (c) **ऊष्म व्यंजन** जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा मुँह से रगड़ खाकर ऊष्मा (गर्मी) उत्पन्न करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है। ये व्यंजन वर्ण हैं—श, ष, स और ह।

### (ii) श्वास (प्राण) की मात्रा के आधार पर

इस आधार पर व्यंजनों के दो भेद होते हैं

- (a) **अल्पप्राण** जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास वायु कम निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन अल्पप्राण होता है; जैसे—

वर्ग	पहला	तीसरा	पाँचवाँ
क वर्ग	क	ग	ङ
च वर्ग	च	ज	ञ

- (b) **महाप्राण** जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा व्यंजन महाप्राण होता है; जैसे—

वर्ग	दूसरा	चौथा
क वर्ग	ख	घ
च वर्ग	छ	झ

## संयुक्त व्यंजन

जब दो-या-दो से अधिक व्यंजन परस्पर मिलते हैं, तो उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। उदाहरणार्थ—छ, क्क, क्ष, त्र आदि संयुक्त व्यंजन के उदाहरण हैं। संयुक्त व्यंजन को व्यंजन-गुच्छ भी कहते हैं। इन्हें निम्न रूपों में व्यक्त किया जा सकता है—

1. संयुक्त व्यंजनों के स्वतन्त्र प्रयोग में क्ष, त्र, ज्ञ एवं श्र चार ऐसे संयुक्त व्यंजन हैं, जिन्हें स्वतन्त्र रूप में प्रयोग किया जाता है।

क्ष = क् + ष, त्र = त् + र, ज्ञ = ज् + ञ,

श्र = श् + र

क्ष = क्षमा, क्षत्रिय, कक्षा

त्र - त्रिशूल, शत्रु, स्वतन्त्र

ज्ञ = ज्ञान, विज्ञान, विज्ञ

श्र - श्रमिक, परिश्रम, श्रेष्ठ

2. द्विवत् व्यंजन के रूप में

न् + न = प्रसन्न, द् + द = उद्देश्य,

ज् + ज = सज्जन

3. संयुक्ताक्षर रूप में

द् + य = उद्योग, त् + प = उत्पन्न,

स् + थ = स्थान

## आगत व्यंजन

हिन्दी में उर्दू-फारसी, अरबी भाषाओं के शब्द प्रयुक्त होते हैं। इनके शुद्ध उदाहरण के कुछ वर्णों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) लगाया जाता है।

**उदाहरण**—ज़मींदार, ज़रा, फीचर, फ़ीरोज़, कज़ाकी आदि।

## अनुस्वार

इसका उच्चारण 'न' या 'म' के स्वर रहित रूप जैसा होता है। इसका प्रयोग वर्तमान में पंचम वर्णों के स्थान पर किया जाता है। इसका चिह्न (◌ं) है। ये पंचम वर्ण हैं— 'ङ', 'ज', 'ण', 'न' और 'म'।

**उदाहरण** गङ्गा-गंगा, चञ्चल-चंचल, ठण्डा-ठंडा  
नन्दन-नंदन, सम्बन्ध-संबंध

## अनुनासिक

इसके उच्चारण में नाक और मुँह दोनों से आवाज आती है। इसका दूसरा नाम चन्द्रबिन्दु भी है, जिसका चिह्न (◌ं) है।

**उदाहरण** आँख, गाँव, पाँव, चाँद आदि।

जिन शब्दों में शिरोरेखा के ऊपर मात्रा होती है, वहाँ अनुनासिक का प्रयोग बिन्दु के रूप में किया जाता है; जैसे—मैं, गोंद, होंगे, भोपू, कोपलें आदि।

## 'र' के विभिन्न रूप

- (i) 'र' का स्वर रहित रूप किसी व्यंजन के पूर्व आने पर वह अगले वर्ण पर रेफ ८ के रूप में लगता है; जैसे—धर्म, कर्तव्य, वर्षा, अर्पण आदि।
- (ii) 'र' का स्वर सहित रूप किसी व्यंजन के बाद आने पर वह उस व्यंजन के निचले भाग में जुड़ जाता है। इसे पदेन कहा जाता है; जैसे—प्रमोद, व्रत, वज्र, भ्रम, क्रम, ग्रह आदि।
- (iii) 'र' का स्वर युक्त रूप 'ट' एवं 'ड' वर्णों के साथ अलग रूप धारण कर लेता है; जैसे—ट्रक, ड्रामा आदि।
- (iv) 'त्' के साथ 'र' मिलकर 'त्र' और श् के साथ मिलकर 'श्र' बन जाता है; जैसे—त्रिकोण, मन्त्र, श्रमिक, परिश्रम आदि।

## वर्तनी तथा उच्चारण

लिखने की रीति को वर्तनी कहा जाता है। वर्तनी का सम्बन्ध उच्चारण से होता है। हिन्दी में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। उच्चारण अशुद्ध होने पर वर्तनी भी अशुद्ध होती है। प्रायः लोग जिन शब्दों के उच्चारण एवं वर्तनी में अशुद्धियाँ करते हैं, उन शब्दों के अशुद्ध और शुद्ध रूप को निम्न तालिका में देखा जा सकता है

### स्वर सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अकाश	आकाश	पुत्रि	पुत्री
अहार	आहार	श्रीमति	श्रीमती
साधू	साधु	वधु	वधू
त्योहार	त्योहार	गौरव	गौरव
दांत	दाँत	प्राय	प्रायः

### व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आकांछा	आकांक्षा	छन	क्षण
जोग	योग	जमुना	यमुना
पेड़	पेड़	मेढ़क	मेढक
खाणा	खाना	रसायण	रसायन

## અભ્યાસ પ્રશ્ન

13. अल्पप्राण होता है  
(a) वर्ग का पहला, दूसरा, तीसरा व्यंजन  
(b) वर्ग का दूसरा, चौथा व्यंजन  
(c) वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ व्यंजन  
(d) वर्ग का पहला, चौथा व्यंजन
14. निम्न में महाप्राण व्यंजन है  
(a) क (b) ख (c) ग (d) ज
15. ऊष्म व्यंजनों का उचित समूह है  
(a) य, र, श, ष (b) श, ष, स, ह  
(c) ल, व, ष, स (d) य, र, श, ष
16. 'ज्ञ' किन दो व्यंजनों से बना है?  
(a) ग् और य (b) ज् और य  
(c) ज् और ज (d) ज् और ङ
17. 'श्र' का व्यंजन रूप है  
(a) श + र् (b) श् + र  
(c) ष् + र (d) स् + र
18. आगत व्यंजन है  
(a) प (b) फ (c) फ़ (d) ब
19. निम्न में पंचम वर्ण है  
(a) त (b) थ (c) म (d) ह
- निर्देश (प्रश्न संख्या 20-24) में दिए गए अशुद्ध शब्दों के लिए शुद्ध शब्दों का चयन कीजिए
20.  
(a) नरज (b) नाराज (c) नारज (d) नरजा
21.  
(a) गुर (b) गूरू (c) गूरु (d) गुरु
22.  
(a) रूची (b) रुचि (c) रुची (d) रूचीन्
23.  
(a) नूपुर (b) नूपूर (c) नुपुरु (d) नूपुरू
24.  
(a) उज्जवल (b) उजवल  
(c) उज्ज्वल (d) उज्ज्वल

## उत्तरमाला

[illegible]